http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

*कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका,* (2025) वर्ष 5, अंक 10, 68-69

Article ID:563

# बकरी एवं भेड़ पालन में वैल्यूचेन: किसानों के लिए सम्पूर्ण मार्गदर्शन

**डॉ प्रफुल्ल कश्यप,**
**डॉ निधि रावत,**
**डॉ नितिन गड़े,**
**डॉ लिक्षवी कुर्रे एवं**
**डॉ जसमीत सिंह**

दाऊ श्री वासुदेव चंद्राकर कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़

*अनुरूपी लेखक
**डॉ प्रफुल्ल कश्यप***

भारत में बकरी एवं भेड़पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल दूध, मांस और ऊन का स्रोत है, बल्कि छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए नियमित आय का भी एक भरोसेमंद साधन है। वैल्यूचेन का मतलब है उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक उत्पाद को पहुँचाने की पूरी प्रक्रिया में मूल्य बढ़ाने के सभी चरण। यदि किसान इसे समझकर अपनाएँ, तो उन्हें अधिक लाभ, बेहतर बाज़ार और टिकाऊ रोज़गार मिलेगा।

**1.** उत्पादनचरण **(Production Stage)**

यह वैल्यूचेन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

- उन्नत नस्ल का चयन
  - बकरी: जमुनापारी, सिरोही, बीटल, बरबरी
  - भेड़: मलगाड़ी, नाली, मरीनो, मुजफ्फरनगरी
- पोषण प्रबंधन
  - संतुलितआहार: हराचारा + सूखाचारा + मिनरलमिक्स + साफपानी
  - गर्भधारण और दुग्धपान के समय विशेष पोषण
- स्वास्थ्य प्रबंधन
  - समय-समय पर टीकाकरण (पीपीआर, एंट्रोटॉक्सिमिया, फूटरोट)
  - कृमिनाशक दवा हर 3-4 माह
- आवास व्यवस्था
  - हवा दार, सूखी और साफ जगह
  - बारिश और ठंड से बचाव के लिए उचित शेड

**2.** प्रसंस्करण चरण **(Processing Stage)**

कच्चे उत्पाद (दूध, मांस, ऊन) को ऐसे रूप में बदलना, जिससे उसका मूल्य बढ़े और वह अधिक समय तक सुरक्षित रहे।

- मांस
  - हाइजेनिक स्लॉटरिंग
  - पैकेजिंग और कोल्डस्टोरेज
- दूध
  - पनीर, घी, दही, फ्लेवर्ड मिल्क बनाना
  - पास्चुराइजेशन और पैकिंग
- ऊन
  - धोना, रंगाई, बुनाई के लिए तैयार करना
- खाल
  - लेदर प्रोडक्ट्स के लिए ट्रीटमेंट

**3.** मार्केटिंग चरण **(Marketing Stage)**

- स्थानीय बाज़ार
  - साप्ताहिक हाट, मंडी
- थोकव्यापारी
  - बड़ी मात्रा में खरीद और वितरण
- ऑनलाइन प्लेटफॉर्म
  - ई-कॉमर्स (जैसे Amazon, Flipkart, DeHaat, AgroStar)
- सहकारी समितियाँ और एफ पी ओ
  - सामूहिक बिक्री से अधिक मुनाफा
- निर्यात अवसर
  - मध्य-पूर्व, अफ्रीका, मलेशिया जैसे देशों में बकरी/भेड़ का मांस और ऊन की बड़ी मांग

**4.** सहायक सेवाएँ **(Support Services)**

- पशुबीमा योजना
  - मृत्यु या बीमारी के समय आर्थिक सुरक्षा
- कृषि ऋण
  - किसान क्रेडिट कार्ड **(KCC)** से सस्ती ब्याज दर पर लोन
- सरकारी योजनाएँ
  - राष्ट्रीय पशुधन मिशन, डेयरी उद्यमिता विकास योजना
- प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता
  - कृषि विश्वविद्यालय, पशुपालन विभाग और NGO द्वारा

**5.** वैल्यूचेन में किसानों की भागीदारी बढ़ाने के तरीके

- एफ पी ओ **(Farmer Producer Organization)** बनाना
- ब्रांडिंग और पैकेजिंग
- डायरेक्ट-टू-कस्टमर **(D2C)** मॉडल अपनाना
- गुणवत्ता प्रमाणन (FSSAI, AGMARK)

**6.** लाभ

- उत्पाद का उचितमूल्य
- बिचौलियों पर निर्भरता कम
- निर्यात से विदेशी मुद्रा कमाई
- स्थानीय उद्योग और रोजगार को बढ़ावा

## निष्कर्ष

यदि किसान बकरी और भेड़पालन में केवल उत्पादन पर नहीं, बल्कि पूरी वैल्यूचेन पर ध्यान दें— नस्ल चयन → स्वास्थ्य प्रबंधन→ प्रसंस्करण→ मार्केटिंग→ ब्रांडिंग, तो उनकी आय 2-3 गुना तक बढ़ सकती है।

सरकार, सहकारी संस्थाएँ और निजी कंपनियाँ मिलकर किसानों को प्रशिक्षण और बाज़ार उपलब्ध कराएँ, तो भारत न केवल घरेलू मांग पूरी करेगा बल्कि बकरी-भेड़ उत्पादों का वैश्विक आपूर्तिकर्ता भी बन सकता है।